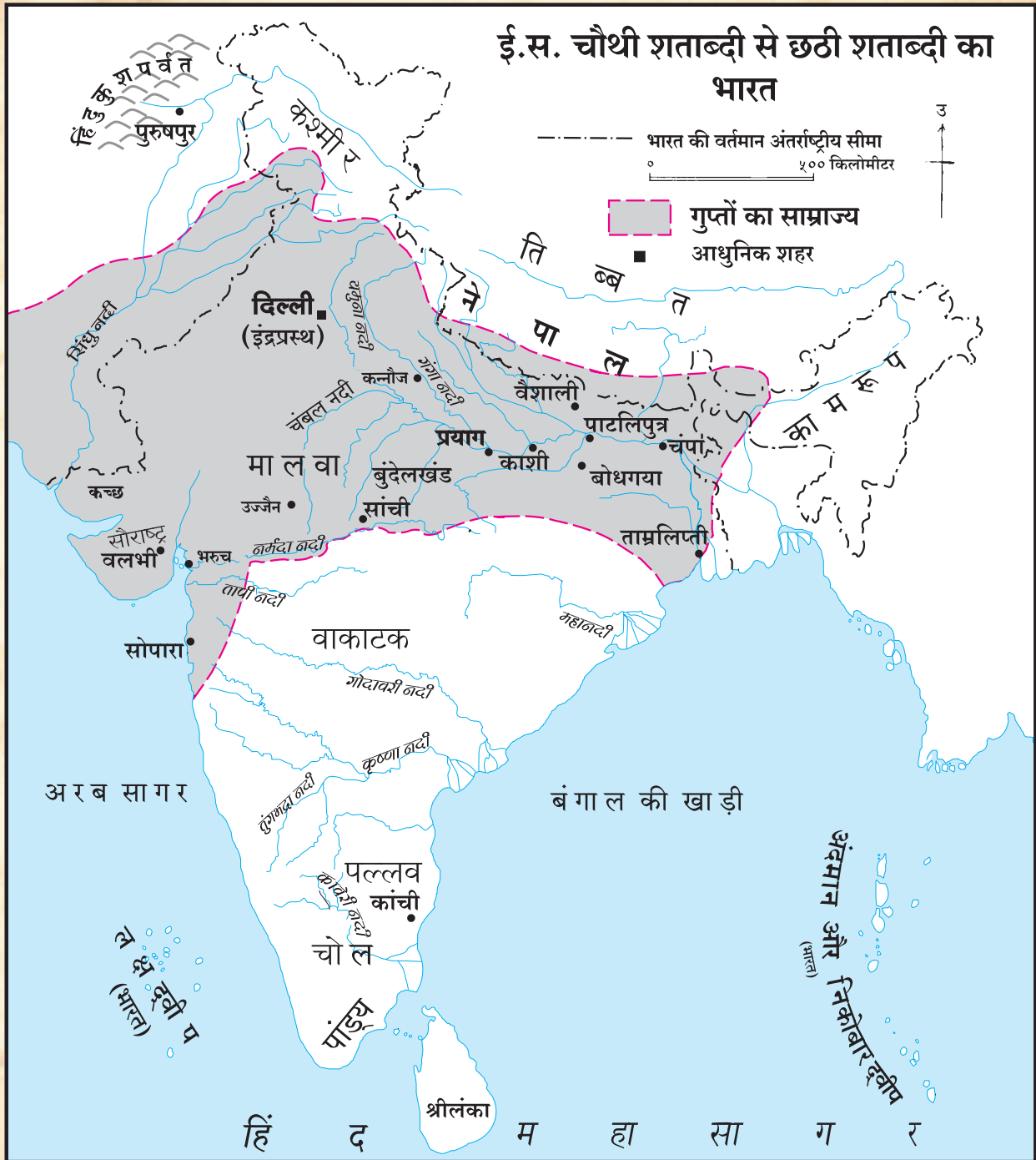


द. मौर्य साम्राज्योत्तर राज्य



द.१ शुंग वंश

द.२ इंडो-यूनानी राजा

द.३ कुषाण राजा

द.४ गुप्त राजवंश

द.५ वर्धन राजवंश

द.६ पूर्वोत्तर भारत की राजसत्ताएँ

द.१ शुंग वंश

सम्राट अशोक के पश्चात मौर्य सत्ता की सामर्थ्य कम होती गई। अंतिम मौर्य नरेश का नाम बृहद्रथ था। मौर्य सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने विद्रोह करके बृहद्रथ की

हत्या की और वह स्वयं राजा बन बैठा ।

८.२ इंडो-यूनानी (ग्रीक) राजा

इस कालखंड में भारतीय उपमहाद्वीप के पश्चिमोत्तर प्रदेश में यूनानी राजाओं के छोटे-छोटे राज्य थे । उन राजाओं को 'इंडो-यूनानी राजा' कहते थे । प्राचीन भारतीय सिक्कों के इतिहास में इन राजाओं के सिक्के बहुत महत्त्व रखते हैं । एक ओर राजा का चित्र और दूसरी ओर देवता का चित्र; इस रूप में सिक्के ढालने की उनकी परंपरा थी । यह परंपरा कालांतर में भारत में भी प्रचलित हुई । इंडो-यूनानी राजाओं में विख्यात राजा मिनेंडर था । उसने बौद्ध भिक्षु नागसेन के साथ बौद्ध दर्शन पर शास्त्रार्थ किया था । मिनेंडर से तात्पर्य मिलिंद है । उसने भिक्षु नागसेन से पूछे प्रश्नों में से 'मिलिंदपञ्च' ग्रंथ की निर्मिति हुई । पाली भाषा में 'पञ्च' शब्द का अर्थ 'प्रश्न' होता है ।



मिनेंडर का चांदी का सिक्का—दोनों पहलू

८.३ कुषाण राजा

भारत में विभिन्न लोगों की टोलियाँ बाहर से निरंतर आती रहीं । उनमें मध्य एशिया से 'कुषाण' नाम की टोलियाँ आई थीं । ई. स. की पहली शताब्दी में उन्होंने पश्चिमोत्तर प्रदेश और कश्मीर में अपना राज्य प्रस्थापित किया । भारत में सोने के सिक्के ढालने का प्रारंभ कुषाण राजाओं ने किया । सिक्कों पर गौतम

बुद्ध और विविध भारतीय देवताओं की प्रतिमाओं का उपयोग करने की प्रथा कुषाण राजाओं ने प्रारंभ की । कुषाण राजा कनिष्क ने साम्राज्य का विस्तार किया ।

सम्राट कनिष्क : कनिष्क का साम्राज्य पश्चिम में काबुल से लेकर पूर्व में वाराणसी तक फैला हुआ था । कनिष्क के सोने और तांबे के सिक्के पाए गए हैं । कनिष्क के कालखंड में बौद्ध धर्म की चौथी परिषद कश्मीर में आयोजित की गई थी । कनिष्क ने कश्मीर में कनिष्कपुर नामक शहर बसाया था । श्रीनगर के समीप काम्पुर नाम का गाँव ही कनिष्कपुर होना चाहिए । कनिष्क के कालखंड में अश्वघोष नामक कवि हुआ । उसने 'बुद्धचरित' और 'वज्रसूचि' ग्रंथ लिखे । कनिष्क के दरबार में प्रसिद्ध वैद्य चरक था ।



कनिष्क का सोने का सिक्का—दोनों पहलू



क्या तुम जानते हो?

कनिष्क का सोने का सिक्का : यह सिक्का सम्राट कनिष्क ने ढाला था । इस सिक्के के दर्शनीय हिस्से पर (मुख्य पक्ष) यूनानी लिपि में 'शाओ नानो शाओ कनेष्की कोशानो' लिखा हुआ है । इसका अर्थ 'राजाधिराज कनिष्क कुषाण' है । सिक्के के पिछले हिस्से पर गौतम बुद्ध की प्रतिमा अंकित है और बगल में यूनानी लिपि में 'बोद्धो' अर्थात् बुद्ध लिखा हुआ है ।

८.४ गुप्त राजवंश

ई. स. की तीसरी शताब्दी के अंत में उत्तर भारत में गुप्त राजवंश की सत्ता का उदय हुआ। लगभग तीन शताब्दियों तक गुप्त राजवंश सत्ता में था। गुप्त राजवंश के संस्थापक का नाम 'श्रीगुप्त' था। गुप्त राजवंश में समुद्रगुप्त तथा चंद्रगुप्त द्वितीय विशेष रूप से उल्लेखनीय सम्राट थे।

समुद्रगुप्त : गुप्त राजा चंद्रगुप्त प्रथम के कार्यकाल में गुप्तों के राज्य विस्तार का प्रारंभ हुआ। उसके पुत्र समुद्रगुप्त ने आस-पास के राजाओं को पराजित करके इस विस्तार को और अधिक बढ़ाया। उसके कार्यकाल में गुप्त सत्ता असम से पंजाब तक फैली हुई थी। उसने तमिलनाडु के कांची तक का पूर्व तटीय प्रदेश भी जीत लिया था। समुद्रगुप्त के इस विजयी अभियान से उसकी सत्ता की धाक सर्वत्र बढ़ गई थी। परिणामतः पश्चिमोत्तर राजाओं और श्रीलंका के राजाओं ने भी उसके साथ मित्रता की संधि कर ली थी। प्रयाग के स्तंभ लेख में समुद्रगुप्त का पराक्रम तथा उसके द्वारा पाई गई विजयों का विस्तृत वर्णन मिलता है। यह लेख 'प्रयागप्रशस्ति' के रूप में विख्यात है। इसे 'इलाहाबाद प्रशस्ति' भी कहा जाता है। समुद्रगुप्त वीणा वादन में प्रवीण था। समुद्रगुप्त ने विभिन्न प्रतिमाओंवाले सिक्के ढाले थे। उनमें एक सिक्का ऐसा है; जिसमें वह स्वयं



समुद्रगुप्त का सोने का सिक्का – दोनों पहलू

वीणा बजाते हुए दिखाई देता है। उसपर 'समुद्रगुप्त' शब्द अंकित है।

चंद्रगुप्त दूसरा (द्वितीय) : चंद्रगुप्त द्वितीय समुद्रगुप्त का बेटा था। उसने गुप्त साम्राज्य को पश्चिमोत्तर में बढ़ाया। उसने मालवा, गुजरात और सौराष्ट्र जीत लिये। चंद्रगुप्त द्वितीय ने अपनी पुत्री प्रभावती का विवाह वाकाटक वंश के रुद्रसेन द्वितीय से कराया। इस तरह दक्षिण की बलशाली वाकाटक सत्ता के साथ संबंध बना लिये। दिल्ली के निकट महरौली में एक लौहस्तंभ है। यह लौहस्तंभ डेढ़ हजार वर्षों से भी अधिक प्राचीन है। फिर भी उसमें जंग नहीं लगा है। यह लौहस्तंभ प्राचीन भारतीयों द्वारा तकनीक में की गई उन्नति का प्रतीक है। इस लौहस्तंभ पर अंकित लेख में 'चंद्र' नामक राजा के उल्लेख के आधार पर यह माना जाता है कि यह लौहस्तंभ चंद्रगुप्त द्वितीय के कालखंड का है। चंद्रगुप्त द्वितीय के कार्यकाल में बौद्ध भिक्षु 'फाहियान' चीन से भारत में आया था। उसने अपनी भारत यात्रा का वर्णन लिख रखा है। उसमें गुप्त साम्राज्य की उत्तम राज्य प्रशासन



क्या तुम जानते हो?

भारत में चीनी यात्री-फाहियान चंद्रगुप्त द्वितीय के कार्यकाल में आया था। अपने यात्रा वर्णन में उसने गुप्तकालीन समाज जीवन को चित्रित किया है। वह कहता है, भारत में बड़े- बड़े और समृद्ध नगर हैं। इन नगरों में यात्रियों के लिए अनेक धर्मार्थ संस्थाएँ भी हैं। नगरों में अस्पताल हैं। वहाँ निर्धनों के लिए निःशुल्क वैद्यकीय सेवाएँ उपलब्ध होती हैं। भव्य विहार और मंदिर हैं। लोगों को व्यवसाय चुनने की पूर्ण स्वतंत्रता है। लोगों के कहीं भी जाने पर प्रतिबंध नहीं लगा हुआ है। सरकारी अधिकारियों एवं सैनिकों को नियमित रूप से वेतन दिया जाता है। यहाँ के लोग शराब का सेवन नहीं करते। हिंसा नहीं करते। गुप्त राज्य प्रशासन सुचारु रूप से चलाया जाता है।

की जानकारी मिलती है ।

८.५ वर्धन राजवंश

गुप्त साम्राज्य का प्रभाव कम होने पर उत्तर भारत में कई राज्यों का उदय हुआ । उनमें से एक वर्धन राजवंश था । दिल्ली के निकट थानेसर नामक स्थान पर प्रभाकर वर्धन नाम का राजा राज्य करता था । उसके कालखंड में वर्धन राजवंश प्रभावी बन गया । हर्षवर्धन उसका बेटा था । हर्षवर्धन ने वर्धन साम्राज्य का विस्तार किया । उसके कार्यकाल में वर्धन साम्राज्य का विस्तार उत्तर में नेपाल, दक्षिण में नर्मदा नदी, पूर्व में असम और पश्चिम में गुजरात तक हुआ था । प्राचीन असम को कामरूप कहते हैं । वहाँ का राजा भास्कर वर्मन से उसके मित्रता के संबंध थे । हर्षवर्धन ने अपना राजदूत चीनी दरबार में भेजा था । हर्षवर्धन ने चीन के सम्राट के साथ मित्रता के संबंध प्रस्थापित किए थे । उसने अपनी राजधानी कन्नौज में प्रस्थापित की । उसके कार्यकाल में व्यापार में समृद्धि हुई । हर्षवर्धन राज्य की आय का बहुत बड़ा हिस्सा प्रजा के हितों के लिए उपयोग में लाता था । प्रत्येक पाँच वर्षों में वह अपनी संपूर्ण संपत्ति प्रजा में दान कर देता था ।

हर्षवर्धन के दरबार में राजकवि बाणभट्ट था । उसने हर्षवर्धन के जीवन पर 'हर्षचरित' ग्रंथ लिखा । उसी के आधार पर हर्षवर्धन के कार्यकाल की जानकारी प्राप्त होती है । हर्षवर्धन ने बौद्ध धर्म का स्वीकार किया था । उसने अन्य धर्मों को भी उदार प्रश्रय दिया था । हर्षवर्धन ने तीन संस्कृत नाटक 'रत्नावली', 'नागानंद' और 'प्रियदर्शिका' लिखे । उसके समय में युआन श्वांग नामक बौद्ध भिक्षु चीन से भारत आया था । उसने संपूर्ण भारत में भ्रमण किया । वह नालंदा विश्वविद्यालय में दो वर्ष रहा था । चीन में जाने के पश्चात उसने बौद्ध ग्रंथों का चीनी भाषा में अनुवाद किया ।

८.६ पूर्वोत्तर भारत की राजसत्ताएँ

पूर्वोत्तर भारत के मणिपुर प्रदेश की उलूपी राजकन्या का विवाह अर्जुन के साथ हुआ था । यह कथा महाभारत में उल्लिखित है । ई. स. चौथी शताब्दी



युआन श्वांग



क्या तुम जानते हो ?

युआन श्वांग ने संपूर्ण भारत में भ्रमण किया । उसने महाराष्ट्र के लोगों के बारे में बड़े गौरवपूर्ण शब्द कहे हैं । वह कहता है—महाराष्ट्र के लोग स्वाभिमानी हैं । उनपर कोई उपकार करे तो वे सदैव उस उपकार को याद रखते हैं परंतु यदि कोई उनका अपमान करे तो वे उसे छोड़ते नहीं हैं । अपने प्राणों की परवाह न कर वे संकटग्रस्तों की सहायता करते हैं । शरणागत के साथ विश्वासघात नहीं करते ।



नालंदा विश्वविद्यालय

में 'कामरूप' राज्य का उदय हुआ। पुष्यवर्मन कामरूप राज्य का संस्थापक था। इसका उल्लेख इलाहाबाद में समुद्रगुप्त द्वारा निर्मित स्तंभलेख में मिलता है। कामरूप राजाओं के अनेक उकेरे हुए लेख पाए जाते हैं। महाभारत और रामायण महाकाव्यों में कामरूप का उल्लेख 'प्रागज्योतिष' नाम से हुआ है। प्रागज्योतिषपुर उस राज्य की राजधानी थी। प्रागज्योतिषपुर से तात्पर्य वर्तमान असम राज्य के गुवाहाटी शहर से है। 'पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी' पुस्तक में उसका उल्लेख 'किरहादिया' अर्थात् 'किरात लोगों का प्रदेश' रूप में किया गया है। कामरूप राज्य का विस्तार ब्रह्मपुत्र नदी की घाटी,

भूटान, बंगाल के कुछ क्षेत्र और बिहार के कुछ हिस्से में हुआ था। पूर्वोत्तर भारत के 'कामरूप राज्य' में युआन श्वांग गया था। उस समय भास्कर वर्मन वहाँ का राजा था।

इस पाठ में हमने मौर्योत्तर कालखंड में उत्तर भारत और वहाँ की विभिन्न राजसत्ताओं का परिचय प्राप्त किया। साथ ही हमने यह भी देखा कि उस समय पूर्वोत्तर भारत में क्या परिस्थिति थी। अगले पाठ में हम समकालीन दक्षिण भारत की राजसत्ताओं का परिचय प्राप्त करेंगे।



क्या तुम जानते हो?

भारतीय परंपरा के अनुसार प्राचीन समय में कश्मीर का नाम 'कश्यपपुर' था। यूनानी इतिहासकारों ने कश्यपपुर का उल्लेख कैस्पैपिरास, कैस्पैटिरोक और कैस्पेरिया के रूप में किया है। महाभारत के समय में वहाँ कंबोज राजवंश के राजा राज्य करते थे। सम्राट अशोक के कार्यकाल में कश्मीर मौर्य साम्राज्य में विलीन हुआ था। ई. स. सातवीं शताब्दी में कश्मीर में कर्कोट राजवंश का राज्य था। कल्हण ने अपने राजतरंगिणी ग्रंथ में इसकी जानकारी दी है।



स्वाध्याय

१. बताओ तो :

- (१) भारत में सोने के सिक्के ढालने का प्रारंभ करनेवाले राजा ।
- (२) कनिष्क द्वारा कश्मीर में बसाया गया शहर ।
- (३) वीणा वादन में प्रवीण राजा ।
- (४) कामरूप से तात्पर्य ।

२. पाठ में दिए गए मानचित्र का निरीक्षण करके गुप्त साम्राज्य के आधुनिक शहरों के नामों की सूची बनाओ :

३. विचार-विमर्श करो और लिखो :

- (१) सम्राट कनिष्क
- (२) महरौली का लौहस्तंभ

४. पाठ में उल्लिखित विभिन्न ग्रंथों और ग्रंथकारों के नामों की सूची बनाओ :

५. गुप्त राजवंश और वर्धन राजवंश की तुलनात्मक तालिका निम्न मुद्दों के आधार पर तैयार करो :

मुद्दे	गुप्त राजवंश	वर्धन राजवंश
संस्थापक		
राज्यविस्तार		
कार्य		



उपक्रम :

मौर्य साम्राज्य के पश्चात भारत में अनेक शासक हुए । उनके विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करो और तुम्हें उत्तम लगनेवाले राजा की भूमिका का अभिनय कक्षा में प्रस्तुत करो ।

६. शब्द पहली हल करो :

१	२		३					
				४				५
६								
			७					
						८		
	९							
१०					११			

खड़े शब्द

२. **** के पराक्रम का वर्णन प्रयाग के स्तंभलेख में पाया जाता है ।
३. महरौली के लौहस्तंभ पर ** नाम के राजा का उल्लेख पाया जाता है ।
५. पुष्यवर्मन ने **** का राज्य स्थापित किया ।
७. बाणभट्ट **** के दरबार में राजकवि था ।
८. इंडो-यूनानी राजाओं में **** प्रसिद्ध राजा था ।

आड़े शब्द

१. **** ने गुप्त साम्राज्य का विस्तार पश्चिमोत्तर में किया ।
४. हर्षवर्धन का एक संस्कृत नाटक ****
६. गुप्त राजवंश का संस्थापक *** था ।
९. **** का विवाह वाकाटक राजवंश के रुद्रसेन द्वितीय से हुआ ।
१०. चंद्रगुप्त द्वितीय के कार्यकाल में भारत में **** बौद्ध भिक्षु आया था ।
११. कनिष्क के दरबार में *** प्रसिद्ध वैद्य था ।
